पितृदोष निवारण हेतु क्या करें ?

केवल श्रीरामशरणम् से जुड़े परिवारों के उपयोगार्थ

देवियों और सज्जनों;

प्रस्तावना :– एक बार प.पू. श्री महाराज सा. ने होली सत्संग के अवसर पर नई दिल्ली में अपने प्रवचन के दौरान फरमाया था कि जिन्हें ऐसा लगता हो कि उनके यहां पितृदोष के कारण कष्ट है वे पितृदोष निवारण हेतु 40 दिवस तक 7 बार अमृतवाणी जी का पाठ करें, इत्यादि।

इस प्रवचन को सुनकर झाबुआ के करोड़ों जाप कर चुके एक साधक ने, (जिसके परिवार में कुछ न कुछ संकट सदैव बना रहता था) 40 + 5 = 45 दिवसीय अमृतावाणी पाठ का संकल्प लिया, साथ ही गीता के 18वें अध्याय का नियमित पाठ व 10 हजार जाप भी किये। यह अनुष्ठान करते करते 45 दिन कब पूरे हो गये उसे पता ही नहीं चला, उसे इसमें रस, आनन्द मिलता रहा और वो पूरे श्रद्धाभाव से 170 दिवस सतत् उक्त व्रत निभाता रहा। 170वें दिवस की रात्री को उसे स्वप्न में अनगिनत पितरों के दर्शन हुवे जो सभी के सभी देवस्वरूप स्थिति (वेशभूषा) में थे और उस साधक पर गुलाब की पंखड़ियों की वर्षा कर रहे थे और कह रहे थे बस बेटा बस अब बन्द कर दे, देख हम सब उच्चावस्था को प्राप्त हो चुके हैं। उस साधक को लगा कि कमरे में छत तक फूल ही फूल भर जाने से उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही है और वो हड़बड़ाकर उठ पड़ा, देखा कमरे में तो कुछ नहीं। उस समय प्रातः के 4 बजे थे। इस साधक के एक ऐसे योद्धा पितृ पुरूष हुवे जो इतिहास में अति सुप्रसिद्ध हुवे, उनकी आत्मा एक शासकीय कालेज के प्रोफेसर के शरीर में (राजस्थान में) आती थी और अमावस्या व पूर्णिमा पर वहाँ काम करवाने वालों की भीड़ लगती थी। इस साधक ने उस स्थान पर अपने रिश्तेदार को फोन लगाया तब पता चला कि पिछले दो माह से कुछ भी नहीं हो रहा है और वो कार्यक्रम बन्द हो गये हैं। यह 3 वर्ष पूर्व की घटना है उसके बाद इस साधक परिवार में सतत् अनुकुलता बनी रहती है।

उत्साहित होकर इस साधक ने अपने 8–10 निकटवर्ती मित्र साधकों (जिनके यहां पितृदोष की उसे सम्भावना लगी) को ऐसा अनुष्ठान निभाने हेतु प्रेरित किया। सभी के यहां शत–प्रतिशत शुभ मंगल की स्थिति निर्मित हो गयी।

पितर लोक :– विज्ञान के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता, केवल उसके स्वरूप में परिवर्तन होता है। हमारी आत्मा भी संस्कार क्रियाऐं होने के बाद पितर रूप में क्रियाशील रहती है। पितृ लोक के ऊपर स्वर्गलोक (देवलोक) है। हमारे पितर, देव और हमारे मध्य सेतु का कार्य करते हैं। अर्यमा पितरों के देव हैं। ब्रह्माण्ड में पृथ्वी से उपर अन्य लोक भी हैं परन्तु पृथ्वी से पहला पितृ लोक हमसे 1.32 लाख किलोमीटर दूर है ऐसा शास्त्रों में वर्णित है। इस लोक में पितरों के अलावा अन्य (दुष्ट) योनियाँ भी निवास करती हैं। हमारे वंश के कुछेक पूर्वज अपने जीवन में किये गये अनुचित कार्यों के कारण सद्गति को प्राप्त नहीं हो पाते और नाना प्रकार के कष्टों को भोगते हैं जिससे छुटकारा पाने हेतु उनकी अपेक्षा अपने कुल के वंशजों से रहती है कि वे ऐसा कोई उपाय करें जिससे उनका फिर से जन्म हो अथवा उनकी आत्मा का मंगल, कल्याण हो। ऐसी ही अपेक्षा हमारे पूर्वज के अलावा कोई अन्य आत्मा की भी होती है जो हमसे अधिक स्नेह रखती है लेकिन विविध कारणों से उनकी सद्गति नहीं हो पाती तो भी हमें पितृदोष की हानि उठाना पड़ती है। इसके अलावा हमारे कुल वंश के कारण जिन लोगों ने त्याग तपस्या की थी अथवा वे हमारे कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुवे थे उनकी भी अपेक्षाऐं हमसे होती है।

पितृदोष के लक्षण :– कष्ट पा रहे पितरों की हमसे कुछ अपेक्षाएं होती हैं परन्तु हम उनकी अपेक्षाओं को ठीक से समझ नहीं पाते हैं जिनसे वो हमारी जीवनचर्या को प्रभावित करते हैं जिसके लक्षण इस प्रकार से महसूस कर सकते हैं:–

घर में आय की अपेक्षा अधिक खर्च/घर के लोगों के आपसी विचार नहीं मिलते/मत भिन्नता से मन भिन्नता/फूट, लड़ाई, झगड़े/सन्तान के विवाह में परेशानियाँ/अथक परिश्रम के बावजूद कम फल की प्राप्ति/बनते कार्यों का बिगड़ जाना/छोटे मोटे कार्यों में भी विलम्ब/घर में सन्तान प्राप्ति में विलम्ब/घर परिवार में अकाल मृत्यु/घर में बच्चे, युवा या प्रोढ़ की जानलेवा बीमारी से मृत्यु/रोग, पीड़ा, अशान्ति पीछा नहीं छोड़ती इत्यादि इत्यादि।

पितृदोष निवारण के प्रचलित उपाय :– पिण्डदान, बिहार, महाराष्ट्र व अन्य प्रदेशों के धार्मिक स्थानों, पवित्र नदियों पर तर्पण, पितरों के निमित्त पूजा, दान, कर्मकाण्ड, अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को खीर युक्त भोजन, मन्दिर में दूध, चीनी, श्वेत वस्त्र, पुष्प आदि का दान, 108 दिनों तक पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा, गौ माता को 5 प्रकार के फल खिलाना, सूर्य चन्द्र ग्रहण में कर्मकाण्ड व दान। श्रीमद्भागवत का पाठ या श्रवण, पीपल वृक्ष पर दीपदान, सोमवती अमावस्या को दूध की खीर बनाकर पितरों को अर्पण, शिव मन्दिर में राम नाम का जाप गीता के 7वें अध्याय का पाठ इत्यादि इत्यादि। कर्मकाण्डी विद्वान ब्राह्मण हमें ऐसे अनेक उपाय बताते हैं। वे सब अपनी जगह ठीक होंगे इस विषय पर हम कुछ टिप्पणी नहीं करना चाहते है। श्रद्धा शब्द से श्राद्ध को जोड़ा गया है जो युक्तियुक्त और उचित है। प्रायः देखा गया है कि इन कर्मकाण्डों में श्रद्धा पीछे हो जाती है और व्यावसायिकता आगे हो जाती है। पूजा–पाठ स्वयं करना ही अधिक श्रेयस्कर व उचित है।

हमें क्या करना है :– हमें अपने पितरों की आत्मा के मंगल कल्याण हेतु 40 दिवस+5 दिवस कुल 45 दिवस यह करना चाहिए :–

प्रतिदिन (45 दिवस न्यूनतम) 7 बार श्री अमृतवाणी जी का (मनन पूर्वक) पाठ। गीताजी के 18वें अध्याय का पाठ। ग्यारह हजार (11,000) राम नाम (इष्ट मंत्र, गुरूमंत्र, तारक मंत्र, महा मंत्र) के मानसिक जाप। प्रतिदिन न्यूनतम एक सुकृत कर्म (परहित) सकारात्मक सोच, परहित प्रार्थना, ईश्वर व गुरूजनों के प्रति कृतज्ञता का भाव, सात्विक जीवन शैली अपनाना। मन, वचन, कर्म की पवित्रता (इस हेतु यथासम्भव सजगता रखना)।

कब से आरम्भ करना :– श्राद्ध (पूर्णिमा) से आरम्भ करें जिसका समापन 45वें दिवस अथवा अमावस्या–दीपावली को होगा। इन 45 दिवसों में कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ, दिवस, पर्व भी आ रहे हैं जो अति उत्तम है। जैसे अमावस्या (सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या) शारदीय नवरात्री, विजयादशमी (दशहरा), पूर्णिमा व दीपावली की अमावस्या इत्यादि। ये साधना की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण व अनन्त गुना फलदायी है।

क्या और कैसे प्रार्थना करना है :– हे परम पिता परमेश्वर, दयालु, कृपालु श्रीराम मैं .... अपने मातृ, पितृ, व पत्नि पक्ष के समस्त पितरों की आत्मा के मंगल कल्याण के निमित्त आप हुजुर के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर प्रार्थना करता हूँ।

मैं.....हाल मुकाम .....का होकर ..... कुलवंश का एक बालक हूँ। हमारे कुल का निवास ..... स्थान से हुआ। कालान्तर में हमारे पूर्वजों का निवास .... में रहा। मेरे पिता का नाम ..... और मेरे दादाजी का नाम ..... था। हमारी कुलदेवी ..... माताजी हैं। इस वंशकुल के समस्त पितरों का मंगल कल्याण हो परमात्मा।

मेरी माता का नाम ..... जो ..... कुल वंश की हैं मेरे नाना का नाम.....है। इनकी कुलदेवी ..... माताजी हैं। इस कुल के समस्त पितरों की आत्मा का मंगल कल्याण हो नाथ।

मेरी धर्मपत्नि का नाम .....है जो ..... कुल वंश की है मेरे श्वसुर का नाम ..... है जो ..... कुल वंश के हैं। इनकी कुलदेवी ..... माताजी हैं। मेरी पत्नि पक्ष के समस्त पितरों का मंगल कल्याण हो नाथ।

हमारे उक्त कुल वंश की जिन्होनें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मदद की अथवा हमारे कुल वंश के कारण जिन्हें परेशानी हुई अथवा वे हमारे कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुवे हों उन सभी जनों की आत्मा का मंगल कल्याण करो दयालु राम।

हे नाथ मेरे व उक्त कुलवंशों के सभी मित्र, स्नेही व मददगार/वफादार जनों अथवा हमारे कारण जो जन दुःखी/पीड़ित हुवे हों उन सभी की आत्मा का मंगल कल्याण करो करूणा सागर।

हे दयालु श्रीराम आप अनन्त ब्रह्माण्डों के एकमेव परमपुरूष व परमपिता हो। यद्यपि ये मेरे, मेरी माता व मेरी पत्नि के पितर हैं परन्तु सभी आप ही के पुत्र हैं अपने इन पुत्रो (बालकों) पर समग्र कृपा करो प्रभु। इन सभी की आत्मा का मंगल कल्याण करो नाथ। मैने इसी निमित्त जो अमृतवाणी/गीता का पाठ किया है/आपके परम पावन नाम के जाप किये हैं इन सबका आपके विधान में जो भी पुण्यफल हो

वो सभी अपने उक्त वर्णित पितरों की आत्मा के मंगल.कल्याण के निमित्त आप हुजुर को ही अर्पित/समर्पित करता हूँ, कृपा कर स्वीकार करो और पितरों पर कृपा फरमावो नाथ।

हे नाथ आपकी पूजा/अर्चना करने मे ज्ञात अज्ञात त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा प्रदान करो, कृपा करो, विनती स्वीकार करो प्रभु। आपकी सदा जय हो जय हो मेरे श्रीराम।

उक्त प्रार्थना प्रतिदिन 11 बार की जाना है। अमृतवाणी पाठ के बाद जब हम वृद्धि आस्तिक भाव की..... दोहा 2 बार बोलकर दो मिनिट का ध्यान लगाते हैं उस समय यह प्रार्थना करें। गीता पाठ के (18वें अध्याय) के आरम्भ व अन्त मे उक्त प्रार्थना करें। 11 हजार जाप के आरम्भ व अन्त में करें। याने 7 बार अमृतवाणी पाठ के दौरान 2 बार गीता पाठ के दौरान व 2 बार जाप के दौरान कुल 11 बार करें। यह प्रार्थना एक कागज पर लिखकर अमृतवाणी में रख लें और पढ़ते जायें। दो चार दिवस में याद हो जायेगी। यह अनुष्ठान यदि महिला करे तो उसे अपने (1) पिता (2) माता (3) ससुर और (4) सास के कुलवंश हेतु करना चाहिए। वे उक्त आधार पर प्रार्थना लिख ले या किसी से लिखवा लें।

प्रतिदिन कितना समय लगेगा :– अमृतवाणी पढ़ने में 10 मिनिट लगते हैं। सवा घन्टा इसका मान लें। गीता के 18वें अध्याय के पाठ में 10 से 15 मिनिट लगेंगे। 11 हजार जाप के 30–35 मिनिट। कुल 2 घन्टे या सवा 2 घन्टे प्रतिदिन लगेंगे।

कोई शर्त बन्धन नहीं :– इस दो सवा दो घन्टे के अनुष्ठान में कोई शर्त बन्धन नहीं। आप टुकड़े–टुकड़े में कर सकते हैं। एक बैठक में एक बार दो बार या तीन बार जैसी सुविधा हो अमृतवाणी कर लें। एक बैठक में गीता पाठ कर लें और एक या दो बैठक में जाप कर लें। पूजाकक्ष या गुरूजनों के निर्धारित स्थान पर करें अथवा अपने बैड रूम में। सुबह, दोपहर, सायं या रात्री के समय जब जिस दिन जैसी सुविधा हो करें। घर पर करें अथवा यात्रा के दौरान करें, जहाँ रहें वहाँ करें। स्नान करके या बिना स्नान किये करें। नीचे बैठकर करें या सोफे.कुर्सी पर बैठकर करें या पलंग पर लेटे लेटे करें। खाट पर पड़े रोगी भी करें। दीपक, अगरबत्ती, पुष्प, आरती, घन्टी नैवेद्य, प्रसाद आदि का कोई बन्धन नहीं। जैसा भी करें श्रद्धाभाव और पूर्ण विष्वास से ही करें बस यही प्रमुख व अनिवार्य शर्त रहेगी।

आभार–कृतज्ञता :– परमात्मा व गुरूजनों के प्रति आभार, कृतज्ञता व्यक्त करें कि आप यह सब निभा पा रहे हैं।

अनुष्ठान समाप्ति पर पितरों से प्रार्थना करें कि हे मेरे सांसारिक पितृगणों आपको बारम्बार प्रणाम करता हूँ। आप ही के कारण मेरा अस्तित्व है और आपकी कृपा से परमपिता परमेश्वर श्रीराम के दरबार में पहुँच पाया हूँ। आप हमें मृत्यु से अमृत की ओर ले चलें, आपका सूक्ष्म जगत से सम्बन्ध है अतः आप हमारे जाप पाठ को, तमाम कठिनाईयों से पार करते हुवे ईश्वर तक पहुँचाऐं। वैसे आपका स्वभाव भी अपने कुल वंश को स्नेह–दुलार प्रदान करने का ही है। आप सदा सदा प्रसन्न रहें और हमारी वृतियों को ईश्वर की ओर मोड़ दें ताकि आपके वंष के बालकों का सर्व प्रकार से कल्याण हो। आपका आशीर्वाद हमें सतत् मिलता रहे जिससे हमारा भक्तिभाव बढ़ता रहे।

अन्य :– 40 + 5 = 45 दिवसीय यह अनुष्ठान है। **जरूरी नहीं कि आप श्राद्ध पूर्णिमा से ही शुरू करें।** आप कभी भी इसे शुरू कर सकते है वहाँ से ही 45 दिवस जोड़ना है/45 दिवस न्यूनतम है आपको आत्मिक आनन्द व सन्तोष का अनुभव हो रहा हो तो आप इसे जब तक चाहे करते रहें/इसकी अनुभूति आपको कुछ दिवस पश्चात खुद व खुद सुखद् रूप में होने लगेगी और आपको लगेगा कि आप पितृ ऋण अदा कर रहे हैं/प्रार्थना का मात्र प्रारूप दिया गया है आप अपनी भाव–भाषा में ही प्रार्थना करें/यदि पितृदोष नहीं है तब भी कर सकते हैं, करना चाहिए/आप जहाँ रह रहे हैं, पले–बढ़े हैं उस क्षेत्र में दुर्घटनाओं में अकाल मृत्यु को प्राप्त लोगों, जीवों के लिये भी यह अनुष्ठान कर सकते हैं/इसका प्रचार प्रसार नहीं करें कि मैं यह कर रहा हूँ/जबरन नहीं करें, मन में पक्का विश्वास हो तो ही करें/इसमें अन्य पूजा पद्वति या कर्मकाण्ड का घालमेल कतई नहीं करें वरना सब कुछ निष्फल ही रहेगा/याने अमृतवाणी, गीता पाठ व जाप के अतिरिक्त कुछ और शामिल नहीं करें/अन्य देवता पर आश्रित ना होकर परमपिता परमेश्वर श्रीराम की अनन्य भक्ति ही रखें/गीता के 18वें अध्याय में दान परिभाषित हुआ है आप पढ़ेगें तो तदनुसार अनुष्ठान की पूर्णता पर यथाशक्ति दान करें/सबकुछ स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है फिर भी कोई जिज्ञासा हो तो **094240–65511** पर सम्पर्क कर सकते हैं।